बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (सत्संग परिचय : प्रश्नपत्र - २ - पूर्व कसौटी - १४ जून, २०१५)

☞ परीक्षार्थीओं को महत्वपूर्ण सूचनाएँ ☜

१. परीक्षार्थी सत्संग प्रारंभ से प्राज्ञ - ३ तक की क्रमशः हर परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद ही अगली परीक्षा दे सकते हैं ।

२. सत्संग शिक्षण परीक्षा के मुख्य दिन परीक्षार्थी के नामलिखित मुख्य पृष्ठ परीक्षा कार्यालय द्वारा प्रिन्ट करके भेजा जाता है । उसके अनुसार ही परीक्षार्थी को परीक्षा की श्रेणी (प्रारंभ, प्रवेश, परिचय आदि...) एवं माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English)में परीक्षा देनी होंगी । **इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करके दी गई परीक्षा मान्य नही होगी ।**

३. परीक्षार्थी को पूर्वकसौटी के प्रश्नपत्र की श्रेणी (प्रारंभ, परिचय, प्राज्ञ-१, केवल प्रथम.....) एवं परीक्षा के माध्यम (गुजराती, हिन्दी, English) अनुसार ही मुख्य परीक्षा देनी होगी । पूर्वकसौटी की जानकारी के अनुसार परीक्षा केन्द्र के मुख्य परीक्षा कार्यकर्ता को अंतिमसूची (Final List) भेजी जाती है, उसके अनुसार ही मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा देनी होगी । **अंतिमसूची से अलग दिये गए विवरणवाली परीक्षा रद्द मानी जाएगी और एसी उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

४. मुख्य परीक्षा के दिन परीक्षा खंड में उपस्थित हर एक परीक्षार्थी अपनी नामलिखित उत्तर पुस्तिका लेकर तथा उसमें मांगा गया अन्य विवरण (जन्म दिनांक, शिक्षा) लिखकर वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर अवश्य करवा लें । **वर्ग निरीक्षक के हस्ताक्षर बिना लिखी गई उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

५. परीक्षार्थी केवल ब्लू या काली स्याही वाली पेन से ही उत्तर पुस्तिका में उत्तर लिखें । पेन्सिल अथवा लाल, हरी या अन्य स्याही से लिखे गए उत्तर या एक से ज्यादा स्याही से **लिखी गई उत्तर पुस्तिका मान्य नहीं होगी ।**

६. सूचनानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा न जा सके, ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । **एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावटवाली उत्तर पुस्तिका रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

७. **परीक्षा खंड के बाहर** अथवा अन्य सभी परीक्षार्थीओं से अलग या परीक्षा के नियमों का उल्लंघन कर के दी गई परीक्षा मान्य नहीं होगी ।

८. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व अनुमति के बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'स्थानापन्न' या 'सबस्टीट्युट राइटर' अथवा 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका रद्द मानी जाएगी ।**

९. **सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय, अहमदावाद को पूर्व अवगत किए बिना, रजिस्टर्ड परीक्षा केन्द्र के बदले में अन्य परीक्षा केन्द्र से दी गई परीक्षा रद्द (केन्सल) मानी जाएगी और उसका मूल्यांकन भी नहीं किया जाएगा ।**

१०. सत्संग प्रवेश, परिचय, प्रवीण एवं सत्संग प्राज्ञ (प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्रों में रजिस्टर्ड हुए) के लिए परीक्षार्थियों को दोनों प्रश्नप्रत्रों की परीक्षा देनी अनिवार्य है । **किसी भी एक ही प्रश्नपत्र की दी गई परीक्षा की उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

११. **मुख्य परीक्षा के दिन उत्तर पुस्तिका के अलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखे हुए उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा ।**

१२. **परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान** किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

१३. **प्राज्ञ की परीक्षा का फॉर्म भरने से पहले निम्नलिखित मुद्दे ध्यान में रखें ।**

- परीक्षार्थी एक ही साल में दोनो प्रश्नपत्र दे सकता है । अथवा पहले साल में पहला प्रश्नपत्र और दूसरे साल में दूसरा प्रश्नपत्र दे सकता है । **पहले प्रश्नपत्र में उत्तीर्ण (पास) होने के बाद ही दूसरा प्रश्नपत्र दिया जा सकता हैं ।** प्राज्ञ परीक्षा में केवल प्रथम प्रश्नपत्र या दूसरा प्रश्नपत्र देनेवाले को उत्तीर्ण होने के लिए उस प्रश्नपत्र में ४५ अंक प्राप्त करना आवश्यक है ।
- जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनो प्रश्नपत्र में रजिस्ट्रेशन कराया हो और यदि वह परीक्षार्थी किसी एक प्रश्नपत्र में ही उपस्थित रहता है और दूसरे प्रश्नपत्र में अनुपस्थित रहता है, **तो एक प्रश्नपत्र की दी गई उत्तर पुस्तिका का मूल्याकंन नहीं किया जाएगा ।** जिस परीक्षार्थी ने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र दिए हों, उसे उत्तीर्ण होने के लिए ९० अंक प्राप्त करने होंगे ।
- प्राज्ञ परीक्षा देने वाले सभी परीक्षार्थी कृपया ध्यान रखें कि जो परीक्षार्थी अलग-अलग साल में प्रश्नपत्र प्रथम और प्रश्नपत्र दूसरा देते हैं, उनको प्रथम प्रश्नपत्र ४५ या उससे ज्यादा अंक से उत्तीर्ण करने के बाद **दूसरा प्रश्नपत्र ज्यादा से ज्यादा एक ही साल के विराम के बाद देना होगा ।** एक से ज्यादा साल की अनुपस्थिति के बाद दिया हुआ दूसरा प्रश्नपत्र स्वीकृत नहीं होगा । **ऐसे परीक्षार्थी को पुनः प्राज्ञ का प्रथम प्रश्नपत्र अथवा दोनों प्रश्नपत्र देने होंगे ।**
- प्राज्ञ परीक्षा के पारितोषिक विजेता की सूची में आनेवाले परीक्षार्थी में से जिन्होंने प्राज्ञ के दोनों प्रश्नपत्र एक साथ एक ही साल में दिया हो, **उनको १० प्रतिशत (फिसदी) अंक पुरस्कार के रुप में दिए जाएगें** और इस तरह परीक्षार्थी पुरस्कार के योग्य माना जाएगा ।
- **नोंध :** जिस परीक्षार्थी ने **भारत की प्रवीण परीक्षा** उत्तीर्ण की हो, ऐसे ही परीक्षार्थी प्राज्ञ-१ परीक्षा दे सकते हैं ।

१४. **अवैद्य रजिस्ट्रेशन !!! परिणाम नहीं मिलेगा !!!**

५०२/३००

बोचासणवासी श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण संस्था

सत्संग शिक्षण परीक्षा (पूर्व कसौटी - १४ जून, २०१५)

(समय : दोपहर २:०० से ४:१५) **सत्संग परिचय : प्रश्नपत्र -२**

सूचना : प्रश्न के बाद में दिए गए अंक उसी प्रश्न के उत्तर के पृष्ठ क्रम बताते हैं । **कुल गुण : ७५**

विभाग-१ : किशोर सत्संग परिचय - प्रथम संस्करण, फरवरी - १९९९

प्र.१ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''तुम्हारे मामा के साधुओं को पीटा गया है ।'' (७७)
२. ''दलदल में गड़े हाथी को केवल दूसरा हाथी ही खींचकर निकाल सकता है ।'' (८०-८१)
३. ''वही काम करना जिससे महाराज प्रसन्न हों ।'' (५०)

प्र.२ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. श्रीजीमहाराज ने कहा : पुत्र भी धन्य और पिता भी धन्य । (३९-४०)
२. श्रीजीमहाराज ने गलुजी को अपना काम निपटाने को कहा । (९-१०)
३. उन्नड बापु कड़वीबाई को बचाने दौड़े । (२१)

प्र.३ ''संगशुद्धि'' (५) - **प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टिप्पणी लिखिए । (वर्णनात्मक)** [५]

प्र.४ निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]

१. रामप्रतापभाई ने दामोदरभाई का तिरस्कार क्यों किया ? (४१)
२. ध्रुवजी को परमात्मा का दर्शन कैसे हुआ ? (१४)
३. शिव या अन्य देवताओं के मन्दिरों के सामने से जा रहे हों तो क्या करना चाहिए ? (१)
४. आत्यंतिक कल्याण के लिए एकमात्र साधन कौनसा है ? (४१)
५. स्वरूपानन्द स्वामी को समाधि होने के बाद श्रीजीमहाराज का कैसा निश्चय हुआ ? (९१)

प्र.५ वचनामृत गढ़डा प्रथम प्रकरण - ८ **का निरूपण लिखिए ।** (५३-५४) [५]

प्र.६ निम्नलिखित कीर्तन / अष्टक / श्लोक आदि को सूचनानुसार पूर्ण कीजिए । [८]

१. कनक छडी सुंदर ..... ताप शमावता रे । (८२)
२. नेत्र कमलने रे ..... दु:ख भागे । (६३-६४)
३. शरणागतपापपर्वतं ..... भजे सदा । (३५)
४. करुणामय-चारु ..... भजे सदा ॥ (३४) - श्लोक का हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

विभाग-२ : प्रागजी भक्त - प्रथम संस्करण, नवम्बर - १९९८

प्र.७ निम्नलिखित कथन कौन, किसको और कब कहता है, यह लिखिए । [९]

१. ''कोई भी भगवान का आनन्द कैसे अनुभव कर सकता है ?'' (५३)
२. ''इन्द्रियाँ एवं मनोविकार जैसे शत्रु रहने पर हम सुख से कैसे सो सकते हैं ?'' (४७)
३. ''तुमने सभी शास्त्रों का अध्ययन भली-भाँति कर लिया है और मुझसे ब्रह्मविद्या भी पूर्ण रूपेण प्राप्त कर ली है ।'' (६०)

प्र.८ निम्नलिखित कथनों के बारे में कारण लिखिए । (दो से तीन पंक्ति में) [६]

१. स्वामी ने कैक्टस के वृक्ष पर केले लगाए । (१९)
२. गुणातीतानंद स्वामी ने प्रागजी भक्त को मन ही मन आशीर्वाद दिया । (७-९)
३. भाद्रोड में संतों ने अक्षरधाम का सुख उठाया । (४३)

प्र.९ निम्नलिखित किन्हीं <u>एक</u> प्रसंग के बारे में १५ पंक्ति में टूंकनोंध लिखिए । (वर्णनात्मक) [५]

१. सत्संग से निष्कासित (३१-३३) २. अक्षरधाम की कुंजी प्रागजी के पास (२३-२५)

प्र.१० निम्नलिखित प्रश्नों के एक (संपूर्ण) वाक्य में उत्तर लिखिए । [५]

१. जुनागढ़ से जाते समय गुणातीतानंद स्वामी नागरवाडा जाने वाले द्वार की ओर आकर क्या बोले ? (३३)
२. गुणातीतानंद स्वामी ने जूनागढ़ में प्रागजी भक्त को देखते ही क्या पूछा ? (६)
३. सूरत में यज्ञपुरुषदास किस के पास ठहरे हुए थे ? और क्या करते थे ? (३७)
४. भगतजी हैज़ा के रोगी को किस तरह ठीक करते थे ? (६४)
५. गोंडल में भगतजी महाराज ने यज्ञपुरुषदास को कौन सी आज्ञा दी ? (६०)

(पृष्ठ पलटिये)

सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद द्वारा किये गये पूर्व कसौटी के आयोजन में मैंने स्वयं कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित रहकर **''सत्संग परिचय : प्रश्नपत्र - २''** परीक्षा दी है । निम्नलिखित बातें सही हैं, जो आपको विदित हो ।

परीक्षार्थी का जन्म दिन :- दिनांक ☐☐ महीना ☐☐ साल ☐☐☐☐

परीक्षा दिनांक और परीक्षा का समय :

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर :

सूचना : सिर्फ़ उपस्थित परीक्षार्थी भूले बिना इस उपस्थिति स्लीप को काटकर, सभी विगत भरकर केन्द्र व्यवस्थापक को वापस कर दें । सिर्फ़ कक्ष में (बैठक कक्ष में) उपस्थित परीक्षार्थी की उपस्थिति स्लीप इकट्ठा करके सत्संग शिक्षण परीक्षा कार्यालय - अहमदाबाद को जमा करा दे । (अपूर्ण विवरणवाली उपस्थिति स्लीपें मान्य नहि होंगी ।)

प्र.११ निम्नलिखित विकल्पों में से केवल सही विकल्प के आगे दिए गए खाने में सही (✓) का निशान करें । **[६]**

सूचना : एक या एक से अधिक विकल्प सही हो सकते हैं । सभी सही विकल्प के आगे ही सही का निशान किया होगा तभी पूर्ण गुण दिए जायेंगे, अन्यथा एक भी गुण नहि दिया जाएगा ।

१. सद्‌गुरु गोपालानंद स्वामी का संग (४-५)

(१) ☐ 'यह तो हज़ारों से भगवान का भजन करवाएगा ।'

(२) ☐ 'वरताल के योगी की और दृष्टि होनी चाहिए ।'

(३) ☐ 'आप जूनागढ जाओ, आपके संकल्प पूरे होंगे ।'

(४) ☐ 'श्रीजीमहाराज से तनिक भी दूर नहीं हैं ।'

२. स्वामी संतों और हरिभक्तों के साथ सांखड़ावदर की तृणस्थली गए तब..... (१३-१४)

(१) ☐ संतों और हरिभक्तों के साथ स्वामी तृणस्थली काटने गए ।

(२) ☐ 'अक्षरधाम अभी क्या करता होगा ?'

(३) ☐ दो चादरों का छाता बनाया ।

(४) ☐ 'कल्याण तीन बातों में निहित है, सत्पुरुष में आत्मबुद्धि, अनुवृत्ति-आज्ञा का पालन और उनकी सेवा ।'

३. प्रागजी भक्त ने किस किस को अक्षर की बात की ? (२५,२७)

(१) ☐ वाघा खाचर (२) ☐ शिवलाल सेठ (३) ☐ त्रिकमदास कोठारी (४) ☐ सिद्धानंद स्वामी

प्र.१२ निम्नलिखित गलत वाक्य को उसके विषय के अनुलक्ष्य में सही लिखिए । **[६]**

सूचना :- संपूर्ण वाक्य सही लिखा होगा तो ही गुण प्राप्त होंगे । अन्यथा एक भी गुण प्राप्त नहीं होगा ।

उदाहरण : जूनागढ में अपूर्व सम्मान : अमीन हरिभक्त आचार्य जटाशंकर ने अपने शिष्य मणिलाल भट्ट से कहा, ''यह जागा भक्त जैसे चमार खाँट के ऊपर बैठे और आचार्य उसे दण्डवत् करे; ऐसा क्यों हैं ?''

उत्तर : जूनागढ में अपूर्व सम्मान : नागर हरिभक्त **डॉ. उमियाशंकर** ने अपने **गुरु बालमुकुन्ददासजी** से **पूछा**, ''**प्रागजी भक्त** जैसा **दरजी गद्दी के** ऊपर बैठे और **संत** उसे दण्डवत् करे; ऐसा क्यों हैं ?''

१. **शिष्य की योग्यता की परीक्षा :** गुणातीतानंद स्वामी ने प्रागजी भक्त से कहा, ''तुम अपनी शारीरिक शक्ति से काम कर रहे हो, किंतु बिना प्राणायाम के तुम्हारी इन्द्रियाँ नियंत्रण में नहीं आएँगी ।'' (११)

२. **अक्षर के ज्ञान का उद्‌घोष :** स्वामी त्रिकमदास को बाड़ी में ले गए और कहा, ''क्या तुम चमत्कार देखना चाहते हो ?'' ऐसा कहकर अपने मूल दिव्य स्वरूप की झाँकी दी । (२७)

३. **संतत्व की कला :** उस समय से रामजी स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीनों अवस्थाओं में अखण्ड भगवान के स्वरूप में निमग्न रहने लगे । (१९)

४. **भगतजी के संत कठिनाई में :** भगतजी दृढ़ धर्म के व्यक्ति हैं । उन्हें सत्संग से बाहर किया तो भी वे महाराज का अखण्ड भजन करते थे । (४२)

५. **जूनागढ में अपूर्व सन्मान :** जागा भकत ने कहा, ''ये गुणातीतानंद स्वामी को सोने के सिंहासन पर बैठा कर उनकी आरती - पूजा, स्वर्ण दिपक से करें तो वह भी कम है ।'' (५७)

६. **भगतजी का मनमोहक व्यक्तित्व :** वडोदरा के धनाढ्य श्री गणपतभाई भागवत के मर्मज्ञ अधिकारी थे । उन्होंने भगतजी की आध्यात्मिक शक्ति को समझ लिया था । (५२)

* * *

सूचना : इस प्रश्नपत्र में से कम या ज्यादा मात्रा में प्रश्न दिनांक ५ जुलाई, २०१५ के दिन होनेवाली मुख्य परीक्षा में पूछे जाएँगे । मुख्य परीक्षा में उत्तरवही के ईलावा अतिरिक्त पन्नों में लिखें हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । परीक्षा कार्यालय, अहमदाबाद की पूर्व मंजूरी बिना मूल परीक्षार्थी के बदले 'लेखाकार' या 'डमी राइटर' एवं 'दूसरे व्यक्ति' द्वारा लिखी गई परीक्षा की उत्तरवही रद मानी जाएगी । एक से ज्यादा प्रकार के अक्षरों की लिखावट रद मानी जाएगी । काटकूट किए हुए उत्तर मान्य नहीं होंगे । अस्पष्ट और पढ़ा ना जा सके ऐसे उत्तर मान्य नहीं होंगे । अभ्यास क्रम में सामिल पुस्तक की अंतिम संस्करण का ही उपयोग करें । परीक्षा-कक्ष में परीक्षा के दौरान किसी भी परीक्षार्थी को मोबाईल फोन तथा इलेक्ट्रॉनिक साधन जैसे टेब्लेट, लेपटॉप आदि का उपयोग करने तथा उसे अपने पास रखने की अनुमति नहीं है ।

☞ **अगत्य की सूचना : सभी परीक्षार्थी अपनी संस्था की निम्नलिखित website - link पर से पुराने सालों के प्रश्नपत्र और उसके उकेलपत्र नि:शुल्क डाउनलोड कर सकते हैं और उसकी प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं ।**

http://www.baps.org/Satsang-Exams.aspx